2018-19

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक संशोधन पत्रिका

विद्यावार्ता TM

July To Sep., 2018
Issue-25, Vol-02

Date of Publication
30 August 2018

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Date of Publication
30 August 2018

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

Editorial Board & Advisory Committee

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
2) M.Saleem, Sialkot (Pakistan)
3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arebia)
4) N.Nagendrakumar (Sri Lanka)
5) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
6) Dr. Basantani Vinita (Pune)
7) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
8) Jubraj Khamari (Orissa)
9) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
10) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
11) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
12) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
13) Prof.Surwade Yogesh (Satara)
14) Dr. Patil Deepak (Dhule)
15) Dr. Singh Rajeshkumar (Lucknow)
16) Dr. Ashlesha Mungi (Baramati)
17) Dr.Patwari Vidya (Jalna)
18) Dr. Maske Dayaram (Hingoli)
19) Dr.Padwal Promod (Waranasi)
20) Dr.Lokhande Nilendra (Mumbai)
21) Dr.Narendra Pathak (Lucknow)
22) Dr.Bhairulal Yadav (West Bangal)
23) Dr.M.M.Joshi, (Nainital)
24) Dr.Sushma Yadav (Delhi)
25) Dr.Seema Sharma (Indor)
26) Dr. Choudhari N.D. (Kada)
27) Dr. Yallawad Rajkumar (Parli v.)
28) Dr. Yerande V. L.(Nilanga)
29) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
30) Dr. Prema Chopde (Nagpur)
31) Dr Watankar Jayshree
32) Dr. Saini Abhilasha,
33) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)
34) Dr. Kewat Ravindra (Chandrapur)
35) Dr. Pandey Piyush (Delhi)
36) Dr. Suresh Babu (Hydarabad)
37) Dr. Patel Brijesh (Gujrat)
38) Dr. Trivedi Sunil (Gujrat)
39) Dr. Sarda Priti (Hydarabad)
40) Dr. Nema Deepak (M.P.)
41) Dr. Shukla Neeraj (U.P.)
42) Dr. Namdev Madumati (M.P.)
43) Dr. Kachare S.V. (Parli-v)
44) Dr. Singh Komal (Lucknow)
45) Dr. Pawar Vijay (Mumbai)
46) Dr. Chaudhari Ramakant (Jalg

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

http://www.printingarea.blogspot.com

28) बाल क्हानी संग्रैह् 'जंगल दी सैर' च मानवीकरण
Dr.Surita Sharma, Jammu. || 118

29) पंचायती राज व्यवस्था का ग्रामीण महिलाओं पर प्रभाव.....
जयेन्द्र कुमार, इटावा || 120

30) समकालीन लेखन में स्त्री कवयित्रियों के स्वर
डॉ.पद्मा सिंह, सुनीता कदम,इन्दौर || 124

31) ब्रिटिश उपनिवेशवादी नीतियों का भारतीय शिक्षा पर प्रभाव : एक अध्ययन
कृष्ण कान्त लाल || 127

32) भारतातील जलव्यवस्थापनाचा ऐतिहासीक अभ्यास
प्रा.प्रविण व्ही. चव्हाण,औरंगाबाद || 132

33) मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक सहिष्णुता और भक्ति आंदोलन
डा. राजश्री सेठी, भीलवाड़ा (राज.) || 136

34) उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं के अकादमिक उपलब्धियों पर उनकी अध्ययन....
श्रीमती ऋचा शर्मा, डॉ. (श्रीमती) कमलेश सिंह,ग्वालियर (म.प्र.) || 141

35) रेखाचित्र : स्वरूप एवं अन्य विधाएँ
डॉ. मिर्झा असद बेग रुस्तुम बेग, बीड || 148

36) हिंदी सिनेमा के विषयों का भारतीय समाज से संबंध
प्रा. डॉ. रामदास नारायण तोडें,वसई (महाराष्ट्र) || 150

37) बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक–उपलब्धि पर समायोजन .....
गोविंदकुमार वर्मा,देवरिया (यु.पी.) || 162

38) बौद्ध शिक्षा के प्रमुख केन्द्र नालन्दा विश्वविद्यालय
डा० सुरेन्द्र सिंह यादव,इलाहाबाद. || 168

39) भाषा विज्ञान और भाषा प्रौद्योगिकी : परिचय
धनंजय विलास झालटे || 169

http://sites.google.com/site/vidyawartajournal

35

रेखाचित्र : स्वरूप एवं अन्य विधाएँ

डॉ. मिर्झा असद बेग रुस्तुम बेग
हिंदी विभाग अध्यक्ष,
मिल्लीया कला, विज्ञान एवं व्यवस्थापन शास्त्र महाविद्यालय बीड

==========**********==========

'रेखाचित्र' शब्द मूलत: चित्रकला का शब्द है। चित्रकला में रेखाओं का बहुत महत्त्व हेता है क्योंकि चित्रकार रेखाओं और रंगों के द्वारा ही अपने भावों को मूर्त करता है। वह विभिन्न रेखाओं के द्वारा अपनी सूक्ष्म अनुभूतियों और भावों को व्यक्त करता है। इस प्रकार 'रेखाचित्र' का शाब्दिक अर्थ हुआ 'रेखाओं के माध्यम से प्रस्तुत चित्र'। साहित्य में 'रेखाचित्र' शब्द का अर्थ थोड़ा परिवर्तित हो जाता है। चित्रकला में जो काम रेखाएँ करती हैं साहित्य में वही काम शब्द करते हैं। जिस प्रकार तूलिका के द्वारा रेखाचित्र खींचना एक कला है उसी प्रकार शब्दों के द्वारा रेखाचित्र खींचना भी एक कला है। जिस प्रकार रेखाचित्रकार कुछ थोड़ी-सी रेखाओं के द्वारा सुक्ष्म भावों को मूर्त करके एक सजीव चित्र उपस्थित कर देता है उसी प्रकार रेखाचित्र-लेखक कुछ थोड़ेसे शब्दों के द्वारा विशिष्ट चरित्रों, वस्तुओं, तत्त्वों, घटनाओं या अनुभूतियों का चित्रण करते हुए एक सजीव चित्र प्रस्तुत कर देता है। रेखाचित्र में एक ही वस्तु घटना याचरित्र प्रधान होता है जिससे सम्बन्धित प्रमुख विशेषताओं को उभारा जाता हैं।[१] शब्दों के माध्यम से किसी भी व्यक्ति, वस्तु या घटना, तत्त्व या अनुभूति का जो चित्र उपस्थित किया जाता है उसे साहित्यिक शबदावली में 'रेखाचित्र' कहा जाता है। इन रेखाचित्रों का पाइक पर एक निश्चित प्रभाव पड़ता है और उसकी छाप पाठक के मन पर बहुत समय के लिए अंकित हो जाती है।

रेखाचित्र और शब्दचित्र

जिस प्रकार रेखाचित्रों में बिना रंगों का प्रयोग किये केवल कुछ सजीव रेखाओं के द्वारा ही भावों को व्यक्त किया जाता है, उसी प्रकार साहित्यिक रेखाचित्रों में भी केवल कुछ शब्दों के ही द्वारा एक सजीव चित्र प्रस्तुत किया जाता है। इसी कारण 'रेखाचित्र' को 'शब्दचित्र' भी कहा जाता है। श्रीराम वृक्ष बेनीपुरी ने 'गेहूँ और गुलाब', 'माटी की मूरतें' तथा 'लालतारा' नामक संग्रहों की भूमिकाओं में रेखाचित्र के लिए 'शब्दचित्र' शब्द का ही प्रयोग किया है। किन्तु 'रेखाचित्र' शब्द अब काफी प्रचलित हो चुका है और यह शब्द सार्थक भी है; क्योंकि शबदचित्र अपनी प्रकृति और स्वरूप में रेखाचित्रों के अधिक निकट पड़ते है। जिस प्रकार चित्रकला में कुछ रेखाअें के ही द्वारा रूप साकार हो जाता है उसी प्रकार साहित्यिक रेखाचित्रों में शब्दों की रेखाओं द्वारा प्रस्तुत रूप को साकार कर दिया जाता है। इतना ही नहीं, शब्दों के द्वारा जब किसी चरित्र के आकार-प्रकार और भाव-भंगिमा का चित्रण होता है तो उसका एक सजीव रूप भी सामने आ जाता है।

रेखाचित्र और संस्मरण

किसी महान् व्यक्तित्व की स्मृति का आत्मीय चित्रण संस्मरण कहलाता है। ऐसी स्मृतियों का, जिसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति से होता है, जब अंकन किया जाता है तो उसे संस्कमरण कहते हैं। हिन्दी में रेखाचित्र और संस्मरण की सीमाएँ प्राय: एक-दूसरे में घुल-मिल गयी हैं। दोनों में बहुत थोड़ा अन्तर है। कहा जा सकता है कि संस्मरणों का संबंध प्राय: किसी व्यक्ति से होता है किन्तु रेखाचित्रों के लिए यह आवश्यक नहीं। दूसरी बात यह है कि रेखाचित्रों के लिए जिस कलात्मक मूर्ति विधायनी शैली की आवश्यकता पड़ती है संस्मरणों के लिए वह आवश्यक नहीं है। तीसरी बात यह है कि रेखाचित्र में जहॉ वस्तुपरक दृष्टिकोण प्रधान हेाता है वहाँ संस्मरण में आत्मपरक दृष्टिकोण। रेखाचित्र में उस व्यक्ति, वस्तु या घटना का अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व हेता है जिसका चित्रांकन लेखक करता है। किन्तु संस्मरणों में उसके निजी व्यक्तित्त्व का भी समान महत्तव होता है। संस्मरणों में लेखक का अनुभूत जीवन विविध सनदर्भों में उद्घाटित होता है। अत: इसमें आत्मीयता अधिक होती है।

कुछ लोगों को यह भ्रम हो जाता है कि संस्मरण में व्यक्तिगत अनुभव अनिवार्य रूप से अंकित होता है, जब कि रेखाचित्र काल्पनिक भी हो सकते हैं। किन्तु वर्तमान संस्मरणों और रेखाचित्रों के देखने से यह विचार भ्रामक लगता है। जीवन में घटित न होने पर भी कोई घटना संस्मरण का विषय बन सकती है। वस्तुत: संस्मरण और रेखाचित्र दोनों कभी-कभी ही अलग किये जा सकते हैं। क्योंकि दोनों वास्तविक जीवन पर आधारित होते हैं। पं. बनारसीदास चतुर्वेदी के शब्दों में, "संस्मरण, रेखाचित्र और आत्मचरित्र इन तीनों का एक दूसरे से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि एक की सीमा दूसरे से कहाँ मिलती है और कहाँ अलग हो जाती है इसका निर्णय करना कठिन है।"[२] महादेवी वर्मा के स्मृति-चित्रों में उनका सरल व्यक्तित्व इतना घुल-मिल गया है कि रेखाचित्र और संस्मरण का अन्तर प्राय: मिट गया है। अपने स्मृति-चित्रों के सम्बन्ध में वे लिखती हैं-

"इन स्मृति-चित्रों में मेरा जीवन भी आ गया है। यह

स्वाभाविक भी था। अँधेरे की वस्तुओं को हम अपने प्रकाश की धुँधली या उजली परिधि में लाकर ही देख पाते हैं, उसके बाहर तो वे अनन्त अन्धकार के अंध हैं। मेरे जीवन के परिधि के भीतर खड़े होकर चरित्र जैसा परिचय पाते हैं, वह बाहर रूपान्तरित हो जायेगा।" परनतु मेरानिकटताजनित आत्मविज्ञापन उस राख से अधिक महत्त्व नहीं रखता जो आग को बहुत समय तक सजीव रखने के लिए ही अंगारों को घेरे रहती है। जो इसके पार नहीं देख सकता, वह इन चित्रों के हृदय तक नहीं पहुँच सकता।"[३]

रेखाचित्र और जीवनी

जीवनी साहित्य के दो प्रमुख भेद किये जा सकते हैं - (१) जीवन-चरित्र और (२) आत्मचरित्र। जीवन-चरित्र के अन्तर्गत वे जीवनियाँ आती हैं जो किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा लिखी जाती है। इन जीवनियों में लेखक अपने नायक के बाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्त्व का उन्नयन एवं विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वह वास्तविक घटनाओं का अंकन और चित्रण करता है। कभी-कभी उसे इतिहास की भाँति अपने चरितनायक से सम्बन्धित घटनाओं को पर्याप्त छान-बीन और अन्वेषण भी करनी पड़ती है। रेखाचित्र में वास्तविक जीवन की झाँकी होती है अत: वह जीवन-चरित्र के निकट पहुँच जाता है किन्तु रोखाचित्र इन दोनों ही प्रकार की जीवनियों से भिन्न होता है। रेखाचित्रकार का उद्देश्य जीवनी या आत्मकथा प्रस्तुत करना नहीं होता। न वह वास्तविक घटनाओं की छान-बीन और अन्वेषण ही करता है। वास्तव में कोई क्रमबद्ध कथा या जीवनी प्रस्तुत करना उसका उद्देश्य ही नहीं होता। वह तो शब्दों की कुछ थोड़ी-सी रेखाओं के माध्यम से किसी चरित्र को या अन्य किसी गुण-धर्म को उभारना चाहता हैं।

रेखाचित्र और मेमोयर्स

'मेमोयर्स' अंग्रेजी भाषा का शब्द है जो 'संस्मरण' से मिलता - जुलता होते हुए भी संस्मरण से भिन्न है। मेमोयर्स में ऐतिहासिक कथा-संकलन होता है। उसमें किसी ऐतिहासिक प्रसंग की स्मृति होती है जिसे प्राय: लेखक अपने संस्मरण के रूप में प्रस्तुत करता है। उसे ऐतिहासिक संस्मरण कहा जा सकता है रेखाचित्र का स्वरूप मेमोयर्स से भिन्न है और मेमोयर्स से उसका सम्बन्ध नहीं जोड़ा जा सकता।

रेखाचित्र और रिपोर्ताज

'रिपोर्ताज' हिन्दी-गद्य की अत्यन्त नवीन विधा है। इसके विकास में पाश्चात्य प्रभाव प्रमुख है। पिछले कुछ वर्षों में यूरोप और अमेरिका में पर्याप्त मात्र में रिपोर्ताज-साहित्य की सृष्टि हुई है। पिछले महायुद्ध और उसके बाद की घटनाओं के रिपोर्ताज पर्याप्त मात्र में प्रस्तुत हुए हैं। वर्तमान जीवन की अव्यवस्था, उथल-पुथल और यंत्रिक जीवन की व्यस्तता ने रिपोर्ताज के विकास में उसकी उपयोगिता के कारण बहुत योगदान दिया है।

'रिपोर्ताज' शब्द फ्रांसीसी भाषा का है। इसका सम्बन्ध अंग्रेजी के 'रिपोर्ट' शब्द से भी हैं। किन्तु यह अखबारी रिपोर्ट के समान सूचनात्मक न रहकर लेखक के व्यक्तित्त्व के स्पर्श से आकर्षक और रोचक हो जाता है।[४] इसमें कम से कम शब्दों में घटना का यथार्थ चित्रण होता है। रिपोर्ताज लेखक सच्ची और छोटी-छोटी घटनाअें के वर्णन द्वारा प्रभाव की सृष्टि करता है। रिपोर्ताज में यथार्थ का विशेष आग्रह होता है। जिस प्रकार रिपोर्ट में सही और आँखों देखा वर्णन होता है, उसी प्रकार रिपोर्ताज में तथ्य का विशेष आग्रह होता है। किन्तु पत्रकारिता से यह इसी अर्थ में अलग होता है कि इसमें तथ्यें को संक्षिपत, आकर्षक ओर कलात्मक रूप से पाठकों तक पहुँचाया जाता है। जिसके माध्यम से लेखक का व्यक्तित्त्व भी झाँकता रहता है।

रेखाचित्र और रिपोर्ताज में समानता यह है कि दोनों में यथार्थ का आग्रह और अनुभूति की मार्मिकता होती है। किन्तु इतना होते हुए भी दोनों में अन्तर है। रेखाचित्र में व्यक्ति अथवा चरित्र की विशेषताओं को प्रधानता दी जाती है जब कि रिपोर्ताज में घटना, दृश्य या वातावरण को प्रधानता दी जाती है। रिपोर्ताज वास्तव में समाज में चर्चित दृश्यों की एक जीवित रिपोर्ट प्रस्तुत करता है। रेखाचित्र में इस प्रकार की रिपोर्ट नहीं प्रस्तुत की जाती।

रेखाचित्र और कहानी

कभी-कभी कुछ विद्वान् रेखाचित्रों का उल्लेख कहानियों के अन्तर्गत कर लेते हैं किन्तु इन दोनों विधाओं में अन्तर है। रेखाचित्र में कहानी की अपेक्षा आत्मपरकता अधिक होती है। रेखाचित्र में प्राय: उन्ही व्यक्तियों और चरित्रों की विशेषताओं का चित्रण होता है जो लेखक के अनुभव से टकराये होते हैं अत: इसमें वैयक्तिक स्पर्श अधिक होता है। कहानी के पात्रों अथवा चरित्रों से रेखाचित्र के चरित्र इसी अर्थ में भिन्न होते हैं।[५] रेखाचित्र में लेखक का उद्देश्य चरित्रों को विशेषताओं द्वारा उन्हें सजीव करने का होता है। उसमें घटना अथवा अन्य तत्त्वों को विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता। कहानी में चरित्रों के अतिरिक्त अन्य तत्त्वों को भी महत्त्व मिलता है। कहानी घटना-प्रधान भी हो सकती है, भावना, वातावरण और लक्ष्य-प्रधान भी।

रेखाचित्र और निबन्ध

पं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने रेखाचित्र को 'रेखामात्र निबन्ध' कहा है।[६] ललित निबन्ध रेखाचित्रों के अधिक समीप पड़ते हैं। देवेन्द्र सत्यार्थी के 'क्या गोरी क्या साँवरी', अनन्त गोपाल शेवड़े के 'तीसरी भूख' तथा सियारामशरण गुप्त के 'झुठ सच' आदि संग्रहों के कई निबन्ध रेखाचित्र-से मालूम पड़ते हैं। किन्तु निबन्ध और रेखाचित्र में अन्तर होता है। ललित निबन्धों में लेखक जितना स्वच्छन्द होता है

उतना रेखाचित्रों में नहीं। वहाँ वह विषय पर बात करते - करते कहीं भी बहक सकता है किन्तु रेखाचित्रों में इसके लिए अवकाश नहीं होता। ललित निबन्धों में मूलतः लेखक का निजी व्यक्तित्त्व प्रधान हेता है जो विषय के साथ झाँकता है या विषय पर छाया रहता है। किन्तु रेखाचित्र में लेखक नहीं बल्कि वह तत्त्व-प्रधान होता है जिसका चित्र शब्दों की रेखाओं से खींचा जाता है। इस प्रकार इन दोनों विधाओं में थोडी भिन्नता है। विषय-प्रधान निबन्धों की प्रकृति तो रेखाचित्रों से बिलकुल भिन्न होती है। वास्तव में जहाँ रेखाचित्र में चिन्तन की प्रधानता होने लगती है वहाँ वह निबन्ध के अधिक निकट हो जाता है।

संदर्भ :

१) The Oxford English Dictionary Vol - IX - P - १३४.
२) संस्मरण - पं. बनारसीदास चतुर्वेदी - P - ०४.
३) अतीत के चलचित्र - महादेवी वर्मा - P - ०२.
४) हिन्दी साहित्य कोश - P - ६५८.
५) रेखा और रंग - विनयमोहन शर्मा - P-०१.
६) हिन्दी का सामाजिक साहित्य - विश्वनाथ प्रसाद मिश्र.

❑❑❑

36

हिंदी सिनेमा के विषयों का भारतीय समाज से संबंध

प्रा. डॉ. रामदास नारायण तोडें
असिस्टंट प्रोफेसर हिंदी, हिंदी विभाग,
संत गोन्सालो गार्सिया महाविदयालय,
वसई (महाराष्ट्र)

==========**********==========

फिल्म निर्देशकों ने हिंदी सिनेमा के उद्‌भव से लेकर आज तक विविध विषयों पर फिल्म का निर्माण किया। यह विषय निश्चित रूप से समाज से जुडेए हुए थे। इनमें हमारे भारतीय समाज की विविध समस्याओं पर प्रकाश डएालने की पुरजोर कोशिश की गई है। हिंदी सिनेमा के विविध विषयों का भारतीय समाज से गहरा संबंध रहा है। समाज में जो कुछ चल रहा है, जो हमारे आसपास घटित हो रहा है उसे पटकथा मे ं तब्दील करके फिल्म के माध्यम से समाज के सामने रखा जा रहा है। आज भारतीय समाज ने बहुत ज्यादा भौतिक प्रगति कर ली है। भारत 'महासत्ता' बनने के सपने देख रहा है। लेकिन कडएवी सच्चाई है कि भारतीय समाज को कई सारी समस्याओ ं ने भी घेर रखा है। ये समस्याएँ हैं —जाति—व्यवस्था, भ्रष्टाचार, नक्सलवाद, आतंकवाद, साम्प्रदायिकता, बलात्कार, संगठित गुनहगारी, किसानो ं की आत्महत्या आदि। ''शुरू के दौर मे ं भले ही अधिकांश फिल्मे ं धार्मिक विषयो ं पर ही बनाई गई, लेकिन वक्त के साथ—साथ फिल्मों का दायरा संख्या के साथ—साथ विषयों पर भी बढ़ता गया। कई सामाजिक, साम्प्रदायिक, आर्थिक और रातनैतिक विषयों पर आधारित सती, विधवा और बाल विवाह, अविवाहित मातश्त्व, देवदासी प्रथा, वेश्यावश्त्ति, बलात्कार, विवाहेत्तर संबंध, आतंकवाद और जातीय हिंसा जैसे कई विवादित विषयों पर